# Chapter 6

# bihar board 8 class history notes अंग्रेजी शासन के खिलाफ संघर्ष

## अंग्रेजी शासन के खिलाफ संघर्ष

(1857 का विद्रोह)

**पाठ का सारांश-** अंग्रेजी शासन से भारत का हर तबका, हर वर्ग परेशान था। जमींदार, नवाब, राजा, किसान, व्यापारी, शिल्पकार, बुनकर, धनवान, गरीब, मजदूर सभी परेशान हो अपने-अपने तरीके से अंग्रेजी शासन का विरोध कर रहे थे। अंग्रेजों ने दरअसल समस्त भारतीयों का जीना हराम कर दिया था। किसी भी राज्य की सुरक्षा सेना पुलिस करती है। जब सेना-पुलिस भी किसी राजा या राज्य के खिलाफ बगावत कर दे तो क्या होगा? 1857 में अंग्रेजी सरकार के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था।

भारतीय सैनिकों की शिकायतें-अंग्रेज भारतीय सैनिकों के साथ भी बहुत भेद-भाव करते थे। अंग्रेज सैनिकों की अपेक्षा भारतीय सैनिकों को बहुत कम पैसे मिलते थे। उन्हें ऊँचे पद भी नहीं दिये जाते थे। उनकी धार्मिक भावनाओं के साथ भी खिलवाड़ बल्कि हमला तक किया जाता था । हिन्दू धर्म में उस समय समुद्र पार करके दूसरे देशों में जाना पाप माना जाता था। पर, 1856 में कानून बनाकर अंग्रेजों ने युद्ध हेतु भारतीय सैनिकों को दूसरे देश में जाकर लड़ने को अनिवार्य कर दिया जिससे उनका असंतोष और भड़क उठा था।

रही-सही कसर 'इन्फील्ड राइफलें' ने पूरी कर असंतोष की अग्नि को घधका दिया। इस राइफल के कारतूस पर कागज का एक खोल चढ़ा होता था। कारतूस भरने के पहले खोल को दाँत से काटकर हटाना पड़ता था। इस बात ने हिन्दू और मुसलमान दोनों सैनिकों को उत्तेजित कर दिया कि उन खोल को बनाने में गाय-सूअर व अन्य जानवरों की चर्बी का इस्तेमाल हुआ है। जहाँ गाय हिन्दुओं के लिए पवित्र है वहीं सूअर मुसलमानों के लिए। दोनों धर्म के सैनिक भड़क गये कि अंग्रेज उनका धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं।

विद्रोह का आरंभ – मार्च, 1857 में बैरकपुर छावनी के एक युवा सिपाही मंगल पाण्डे ने नए कारतूस और राइफल लेने से इन्कार कर दिया। दबाव डालने पर उसने अपने अफसर पर हमला कर दिया। उसे गिरफ्तार करके तुरंत फाँसी पर लटका दिया गया। इसके कुछ दिनों के बाद मेरठ छावनी के 90 सैनिकों ने भी ऐसा ही किया। उन्हें भी गिरफ्तार कर 10 वर्षों की सजा सुनाई गई। इस घटना ने उस छावनी के सभी भारतीय सैनिकों को भड़का दिया। 10 मई, 1857 को उन्होंने पूरी छावनी में विद्रोह कर दिया। उन्होंने अपने साथियों को छुड़ाया, अपने अफसरों की हत्या कर दी और शास्त्रागार लूट लिये। उन्होंने फिर मेरठ शहर में अंग्रेजों और उनके समर्थकों के साथ सरकारी खजाने को लूट लिया। फिर वे दिल्ली पर कब्जा कर लिये।

इन विद्रोही सिपाहियों ने मुगल बादशाह को अपना नेता घोषित कर उन्हीं के निर्देशन में संघर्ष चलाने का फैसला लिया। शहरी लोगों के एक बड़े वर्ग के विद्रोहियों ने साथ दिया ।


https://www.evidyarthi.in/

बगावत फैलने लगी–दक्षिण और पश्चिम भारत को छोड़ पूरे देश में बगावत की आग फैलने लगी। असंतुष्ट राजाओं, नवाबों और जमींदारों ने भी विद्रोहियों का साथ दिया। उनकी उम्मीद थी कि अंग्रेज भारत से चले जाएंगे तो उन्हें अपना खोया हुआ रूतबा वापस मिल जाएगा । दिल्ली के बाद कानपुर, लखनऊ, झाँसी, आरा इत्यादि जगहों पर विद्रोहियों ने अंग्रेजी शासन को समाप्त कर दिया ।

1857 का विद्रोह और बिहार:–बाबू कुंवर सिंह 1857 के विद्रोह में बिहार और आस-पास के इलाके के नेता थे। उन्होंने अंग्रेजों को जमकर चुनौती दी। बहावी नेताओं, मौलवी विलायत अली और इनायत अली के विरोध करने पर अंग्रेजों ने इन्हें गिरफ्तार कर व अन्य बहावी नेताओं का कठोरता से दमन कर पटना शहर को तो बचा लिया पर आरा, जगदीशपुर पर बाबू कुंवर सिंह विजय प्राप्त कर ली। बाद में अंग्रेजों के हमले से घायल होकर बाबू कुंवर सिंह की मौत हो गयी। बनारस, जौनपुर, आजमगढ़, बलिया आदि क्षेत्र भी अंग्रेजों के हाथ से निकल गये। कुँवर सिंह के निधन के बाद उनके भाई अमर सिंह ने छापामार युद्ध से अंग्रेजों को परेशान किया।

अंतत: वे भी गिरफ्तार कर लिये गये । उनपर मुकदमा चला। इस बीच उनका भी निधन हो गया।

विद्रोही क्या चाहते थे—विद्रोही चाहते थे कि अंग्रेज भारत से चले जाएँ और भारत में पूर्व की मुगलकालीन शांत राजव्यवस्था बरकरार हो जाए। जिन शासकों का शासन छिन गया उन्हें वापस प्राप्त हो जाए। व्यापारियों को स्वतंत्र रूप से व्यापार करने की आजादी हो । सभी लोग स्वतंत्र रूप से अपनी आजीविका चलाएँ।

विद्रोह को दबा दिया गया—अंग्रेजों ने दो वर्ष के अंदर इंग्लैंड से और फौज मंगाकर भारत में जगह-जगह विद्रोह को पूरी तरह से दबा दिया। मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के बेटों को उसके सामने ही गोली मार दी गयी और जफर को रंगून भेज दिया गया जहाँ 1862 में उनकी मृत्यु हो गई। लखनऊ पर कब्जा कर लिया गया। बेगम हजरत महल नेपाल भाग गयी। कानपुर को भी अंग्रेजों ने जीत लिया। नाना साहब नेपाल चले गए । झांसी की रानी युद्ध करती हुई शहीद हो गयी। तात्या टोपे भी एक जमींदार के धोखे के कारण पकड़ लिए गए।

कहाँ बंदूक और कहाँ तलवार, बंदूक की जीत तो होनी ही थी। अंग्रेजों ने 1857 में उठे विद्रोह को 2 वर्षों के अंदर पूरी तरह से दबा-कुचल दिया ।

विद्रोह के बाद का वर्ष 1858 में ब्रिटिश संसद ने एक कानून पास कर भारत से ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त कर सीधे ब्रिटेन की सरकार के शासन को स्थापित किया ।

भारत का प्रमुख प्रशासक ब्रिटिश सरकार के एक मंत्री को बनाया गया। इसे भारत सचिव कहा गया । भारत के सभी शासकों को भरोसा दिलाया गया कि भविष्य में उनके राज्य को उनसे छीना नहीं जाएगा।

यूरोपीय सैनिकों की संख्या बढ़ाकर 2:5 कर दी गयी। यानी प्रत्येक पाँच भारतीय सैनिक पर दो गोरे सिपाहियों को लगाया गया। यह भी तय किया गया कि अवध, बिहार, मध्य भारत एवं दक्षिण भारत से सिपाहियों की भर्ती की जगह पर गोरखा, सिक्ख और पठान सैनिकों की ज्यादा भर्ती की जाएगी।

इन तीन समूहों के सैनिकों ने विद्रोह को दबाने में कंपनी को काफी सहयोग दिया था।


https://www.evidyarthi.in/